Open Access

उदयगिरी - बहुभाषिक इतिहास संशोधन पत्रिका

(A Bimonthly, Refereed, & Peer Reviewed Journal of History)

Published by: AAASSHER, Mumbai, (MS) India

Journal homepage: https://udayagiri.aaassher.org/

ISSN (Online): 2583-8423

Volume 1, Issue 4, October 2023; Pages 527 – 532

DOI: 10.5281/zenodo.10137336

Original Research Article

महात्मा गांधीजी एवं सर्वोदय संकल्पना

प्रा. राजकुमार ज्ञानोबा चाटे

विभाग प्रमुख, इतिहास विभाग, महिला महाविद्यालय अंबेजोगाई जि. बीड ४३१५१७ महाराष्ट्र, भारत

Corresponding author E-mail: chaterajkumar@gmail.com

Received: 13 October, 2023 | Accepted: 26 October, 2023 | Published: 27 October, 2023

प्रस्तावना

मोहनदास करमचंद गांधी भारत के स्वतंत्रता से पहले और बाद में सबसे महत्वपूर्ण नेता हैं, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के दौरान इतिहास बदल दिया। वे सवज्ञा जन-आंदोलन के जरिए सत्याग्रह का इस्तेमाल करने वालों में प्रथम थे। उनके सत्याग्रह की अवधारणा पूरी तरह से अहिंसा पर आधारित थी । यह अवधारणा गांधी के विचार कर्म और व्यवहार में दिखाई देती है। गांधी के नेतृत्व में भारत ने स्वतंत्रता हासिल की ओर वे दुनिया भर में नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणा-स्रोत बने। आज सर्वोदय मात्र एक विचार का स्वप्नलोकीन धारणा का प्रतिनिधित्व नहीं करता है बल्कि मानवीय मस्तिष्क को मानवीय समाज की पुर्नसंरचना के लिए पुनर्भिमुख करने का प्रयास करता है। इसके एक आंदोलन के आयाम और एक सामाजिक-आर्थिक शक्ति की महान संभावनाओं को मान लिया है। यह एक गतिशील दर्शन है जिसने मानवीयता में मूलभूत परिवर्तन के आगमन को संभव किया है। सर्वोदय भारत के प्राचीन आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों की नींव पर आधारित एक नया समाज बनाना चाहता है और समकालीन समस्याओं की चुनौतियों को पूरा करने का प्रयास करता है।!

शोध के उद्देश

१) महात्मा गांधीजी के सर्वोदय आंदोलन को उजागर करणा |

२) महात्मा गांधी जी के सत्य एव अहिंसा पर प्रकाश डालना |

गांधी ने मूलतः 'सर्वोदय' शब्द की रचना नहीं की। उनसे भी पहले, सर्वोदय के विचार धार्मिक पुस्तकों - वेद, उपनिषद, रामायण, गीता, कुरान और अन्य में पाये जाते हैं। भारतीय और पश्चिमी संतों द्वारा भी इसका उपदेश दिया गया है। लेकिन गांधी ने इस युगों पुराने सिद्धांतों एंव आदर्शों को विस्तृत अर्थ एंव प्रयोग दिया। वास्तव में गांधी के निधन के बाद 'सर्वोदय' शब्द वृहद प्रधानता से आया। यह नाम सत्याग्रह मंडल की प्रधानता देने के लिए चुना गया क्योंकि

'सर्वोदय' शब्द का एक प्रतिबंधित अर्थ था जिसमें रचनात्मक कार्य शामिल नहीं थे। तत्कालीन चिंतन की धारा, जिसने गांधी के दर्शन को इसके समग्र रूप से स्वीकार किया और जिसके केंद्र में विनोबा भावे है, सर्वोदय की धारा के रूप में जानी जाती है।' इस धारा के प्रमुख चिंतक थे- आचार्य शंकर राव देव, धीरेन्द्र मजूमदार, जयप्रकाश नारायण । ये सभी गांधी के साथ उनके रचनात्मक कार्यों में सलग्न थे।[1]

सर्वोदय की उत्पत्ति संस्कृत में हुई है जो 'सर्व' यानि सभी और 'उदय' यानि उत्थान से मिलकर बना है। सर्वोदय का उत्पत्तिमूलक अर्थ सभी का विकास है। इसमें सभी जीवि प्राणी शामिल हैं। अन्य शब्दों में शाब्दिक अर्थ में सर्वोदय का अर्थ सभी का जनकल्याण है। यह शब्द पहली बार गुजराती में अनुवाद के लिए शीर्षक के रूप में जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू द लास्ट में प्रकट हुआ।' सर्वोदय नौ आलेखों की श्रृंखला का शीर्षक था जिसे गांधी ने लिखा। आवश्यक रूप से सर्वोदय एक आध्यात्मिक क्रिया है जिसके दो अर्थ हैं, नकारात्मक और सकारात्मक नकारात्मक अर्थ में, कोई भी अन्य से किसी चीज का आनंद प्राप्त करने से बाहर नहीं है। भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक का पूरा खिलना है। यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें सभी भाग ले सकते हैं। " आचार्य विनोबा भावे के अनुसार, सर्वोदय शब्द दो स्तरीय अर्थ पर नियंत्रण रखता है, पहला, सर्वोदय का अर्थ वैज्ञानिक ज्ञान से पीड़ा और गरीबी को दूर कर सभी को प्रसन्न करना है। दूसरा, देवत्व, दया और समानता से पूर्ण विश्व राज्य की स्थापना सर्वोदय कहा जाता है।" सर्वोदय का लक्ष्य कुछ का बहुतों का उदय नहीं है, या अधिकाधिक संख्या का भी उदय नहीं है। यह उपयोगितावाद नहीं है जिसका अर्थ अधिकतम लोगों की अधिकतम भलाई है। [2]

सबों के जनकल्याण के संकेत के अतिरिक्त सर्वोदय दो और अर्थों को बताता है, पहला, वैश्विक जनकल्याण और दूसरा सभी का एकीकृत विकास अहस्तक्षेप का दर्शन कुछ के द्वारा बहुतों के शोषण पर आधारित है। उपयोगितावादी विचारधारा अल्पसंख्यक की पूरी तरह उपेक्षा करते हुए बहुसंख्यक का समर्थन करता है। सर्वोदय इन सिद्धांतों को अस्वीकार करता है जो कुछ के आनंद के लिए हैं और वर्ग, वंश, रंग, प्रजाति क्षेत्र और धर्म से परे सभी जनकल्याण की वकालत करता है। सर्वोदय का दर्शन मानवीय समाज की पुर्नसंरचना का प्रयास करता है। या मानवीय मस्तिष्क को पुनराभिमुख करता है। इसका अर्थ जनकल्याण एंव सौभाग्य सबके लिए है। सभी हितों की टकराहट के बिना एक साथ विकास करें।

सर्वोदय के अर्थ की व्याख्या करते हुए दादा धर्माधिकारी न कहा कि, "सर्वोदय एक वृहद संकेत वाला शब्द है और यह न केवल बहुतों या अधिकांश बल्कि सबों को आत्मसात करता है। सर्वोदय एक दर्शन है जो मानवीय मस्तिष्क और आत्मा की अपूर्णता के विरुद्ध रोक लगाता है। सर्वोदय शब्द के अर्थ के संबंध में, वृहद तौर पर दृष्टिकोण हैं- पहला, यह

सूक्ष्म रूप है. जिसका सामान्य अर्थ है- एक और सबों का उदय, दूसरा, इसका वृहद रूप सभी के उदय का संकेत देता है, वैश्विक जनकल्याण सबों के सर्वांगीण विकास का संकेत देता है। लेकिन यह कई अन्य अर्थों का भी संकेत देता है। इसके नकारात्मक अर्थ में, यह कभी भी किसी एक व्यक्ति को शेष मानव जाति से अलग आनंद के लिए नहीं छोड़ता है। एक सकारात्मक अर्थ में, यह व्यक्ति के विकास के सभी संकार्यों को प्रोन्नत करता है। विनोवा वे के अनुसार, इसका अर्थ सब पीड़ाओं को दूर सभी को प्रसन्न करना ही नहीं है, बल्कि समानता पर आधारित एक विश्व-स्थिति को लाना है। गांधी

के लिए, सर्वोदय वृहद अर्थों में स्व-त्याग एंव स्वार्थहीन सेवा सहित एक का सभी में समाविष्ट होना है। इसका उद्देश्य न केवल न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति है, बल्कि सभी व्यक्तियों के नैतिक- आध्यात्मिक आशय का विकास करना है। [3]

रस्किन और गांधी दोनों ही गंभीरतापूर्वक समाजिक जनकल्याण से संबंधित थे। यद्दापि रस्किन ने "अधिकतम संख्या" के सामाजिक जनकल्याण को लक्ष्य बनाया वहीं गांधी ने सर्व जनकल्याण को लक्ष्य माना। अतः विनोवा भावे यह अनुभव करते हैं कि गांधी सर्वोदय के अर्थ के सच्चे लेखक हैं। जबकि अन टू द लास्ट का अर्थ केवल अंतिम उदय है (अंत्योदय) वास्तव में यह स्वीकार करना होगा कि रस्किन की 'अन टू द लास्ट का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीप से गांधी पर मजबूत प्रभाव है कि वह सर्वोदय के आर्दश को पूरा करें, जिसका कि उन्होंने अपने जीवन के मिशन में बनाये रखा।

गांधी लियो टॉलस्टाय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गॉड विद यू' और "क्रिस्चिनिटी एंड पैट्रियोटिज्म" के लेखों से अत्यधिक प्रभावित थे। टॉलस्टाय के जीवन की सादगी और उद्देश्यों की शुद्धता ने गांधी को गहराई से प्रभावित किया । उनका ईसाईवाद, चर्च और शिक्षाओं ने गांधी की भावनाओं को जगाया। टॉलस्टाय ने प्रेम को जीवन का कानून बताया। अहिंसा का सिद्धांत समूचे मानव जाति के लिए प्रेम के आधार पर टिका है। टॉलस्टाय और गांधी दोनों ने अपने जीवन की सारी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रेम के उपकरण को अपनाया। उनकी सम्मानित पुस्तक "द किंगडम ऑफ गॉड विद यू" में हम गांधी पर एक राजनीतिक शक्ति के अमिट चिह्न को उत्पन्न करते पाते हैं। गांधी ने इसे स्वीकार किया कि इसको पढ़ने से उन्हें अलगाववाद को दूर करने में सहायता मिली और उन्हें इसने अहिंसा का विश्वास दिया। गांधी और टॉलस्टाय, दोनों ने ही यह दृढ विश्वास किया कि अहिंसा सभी व्याधियों का उपचार है, राजनीतिक बीमारियों को हटाता है, और धरती पर शांति स्थापित करता है तथा मानव जाति की भलाई करता है। वास्तव में गांधी और टॉलस्टाय, दोनों ही इस विश्व की बुराईयों और पीड़ा को दूर करने के लिए प्रेम की महत्ता पर विश्वास करते थे। टॉलस्टाय ने सत्य, प्रेम और अहिंसा का अनुभव कियाऐर गांधी ने इन सदगुणों को ग्रहण किया एवं अपने जीवन को इन मार्गों की और निर्देशित किया। [4]

गांधी के सर्वोदय का सिद्धांत टॉलस्टाय के अराजकतावाद के दर्शन से अत्यंत निकट है। गांधी के सर्वोदय से आशय का शुद्ध आर्दश दार्शनिक अराजकतावाद का आदर्श है- एक राज्यविहीन समाज को स्वैच्छिक सहयोग द्वारा चिन्हित है। ईश्वर में अटूट आस्था, शोषित के प्रति सहानुभूति, हिंसा के प्रति विमुखता, मानव-सम्मान की गहरी आस्था इत्यादि ने इन दोनों दार्शनिकों को समान उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के लिए प्ररित किया। लेकिन गांधी टॉलस्टाय के ही संपूर्ण रास्ते पर नहीं थे। दोनों दार्शनिकों में अंतर इस बात पर है कि गांधी टॉलस्टाय से बहुत अधिक व्यावहारिक थे। टॉलस्टाय हिंसा के सभी अभिव्यक्तियों से पीछे हटते थे गांधी ने हिंसा की अनुमती दी, लेकिन, हिंसा का उद्देश्य क्रोध नहीं बल्कि सच्चा प्रेम था। इस प्रकार गांधी के अहिंसा के सिद्धांतों का नैतिक विषय, जो एक आलम्ब का निर्माण करता है इसके चारों ओर सर्वोदय के विचारधारा का सिद्धांत आधारित है, टॉलस्टाय की तुलना अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह इस कारण है चूंकि गांधी गीता के 'निष्काम' से अत्यधिक प्रभावित थे। जिसका अर्थ है कि बिना किसी लगाव के कार्य करना । अमरीकी शांतिवादी एक उन्मुक्त आत्मा का विजेता था। और तत्कालीन राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों द्वारा अस्वीकृत था। उसमें हम नैतिक व्यक्तिवाद के तत्व को आविष्कृत करते हैं जो उसके 'सविनय अवज्ञा' के अर्थ का चरमोत्कर्ष है। थोरो ने अपने भाषाणों में

1849 में इस शब्द का प्रयोग किया। यह अवश्यक है कि गांधी ने अपने 'सविनय अवज्ञा के विचारों को थोरो के लेख से नहीं ग्रहण किया। वास्तव में दक्षिण अफ्रीका की सत्ता के विरोध ने गांधी को थोरो के सविनय अवज्ञा' के लेख को आगे रखा। तब इस आंदोलन को निष्क्रिय विरोध के रूप में जाना गया। गांधी संविधान अवज्ञा के शब्द से संतुष्ट नहीं थे, क्योंकि यह संघर्ष के पूरे अर्थ को प्रसारित करने में असफल था। इसलिए उन्होंने 'सविनय विरोध' शब्द को ग्रहण किया। [5]

थोरो ने संकीर्ण गांधी ने अपनी प्राथमिक शक्ति और प्रेरणा भगवत गीता से ही ग्रहण की। गांधी के लिए गीता शाश्वत मां' है। उनके अनुसार, गीता का सार आत्म-अनुभव है। वह कहते हैं कि "आत्म अनुभव और इसका अर्थ गीता की विषय-वस्तु है। वह आगे की पुष्टि करते हैं कि, "जो गीता के भावना को पढ़ता है वह अहिंसा के रहस्य, वह स्वयं को अनुभव करने का रहस्य- भौतिक शरीर के द्वारा करने की शिक्षा देती है। गीता का मुख्य उद्देश्य अधार्मिक को दबाना और धर्म की स्थापना करना । यह सभी के लिए शांति और सौभाग्य लाना चाहता है। यह संक्षिप्त रूप में हिन्दू विचारधारा को प्रस्तुत करता है, जो बदले में, सभी प्राणियों के लिए भाई-चारे की बात करता है। जैसा कि ईश्वर और इसकी सभी रचनायें एक हैं। यह सभी स्वार्थहीन सेवाओं को सभी जीवों के जन-कल्याण को बढ़ावा देने के महत्ता देने को रेखांकित करता है। सर्व धर्म के द्वारा गीता का लक्ष्य "सर्वभूतहित" या सभी प्राणियों की भलाई भी है। इस प्रकार, गीता सर्व जनकल्याण या सर्वोदय का उपदेश देती है, जिसने गांधी के विचार और क्रिया को प्रभावित किया।

१. वह व्यक्ति के विकासवादी मूल्यांकन में विश्वास करते हैं।
२. वह व्यक्ति के साध्य के रूप आत्मा पूर्णता को मानते हैं।
३. वह महसूस करते हैं कि साध्य हमेशा प्राप्त होने से पहले व्यक्ति के नियंत्रण से बाहर है।
४. वह मानते हैं कि यदि साधन साध्य से अनुशासित होगा तो साध्य कम प्रभावशाली हो सकता है। [6]

गांधी के -आयामी व्यक्तित्व के पास समस्याओं के संबंध में स्पष्ट विचार एवं बहु-अ निश्चित दृषटिकोण था, जो उनके समय में भारत ने सामना किया। भारतीय समाज गहरी बुराइयों से पूर्ण था। इसने स्वयं को सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षणिक तौर पर नीचे गिरा दिया था । दरिद्रता ने भारत की सामाजिक, स्थिति को बर्बाद कर दिया था, जिसने जाति-संघर्ष, बाल-विवाह, छुआछूत, सती प्रथा. स्त्रियों को शिक्षा सर्वोदय की मानसिकता के कुछ विशेषतायें आवश्यक हैं। गांधी ने एक व्यक्ति को ग्यारह प्रतीकों को आत्म अनुशासन हेतु प्रस्तुत किया, ताकि एक अनुशासित समाज उभर सके। स्व-त्याग सर्वोदय के सामाजिक व्यवस्था का सार है। प्रत्येक व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों की प्रसन्नता के लिए त्याग करने को तैयार एवं इच्छुक रहना चाहिए उसे अन्य के लिए कार्य करना चाहिए और इसके बदले में प्राप्ति की आशा नहीं करनी चाहिए । सर्वोदय द्वारा वह नीचे से ऊपर की ओर राष्ट्र का निर्माण चाहते थे और स्वतंत्रता, न्याय, समानता और भाईचारा पर आधारित नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण चाहते थे। गांधी का आदर्श (सर्वोदय) समाज निम्नांकित विशेषताओं द्वारा चिन्हित किया गया है -

इसमें कोई दमनात्मक राज्य शक्ति नहीं होनी चाहिए और नागरिकों की सामाजिक बाध्यता जैसे प्राचीन भारत की वर्णाश्रम व्यवस्था से संगत होनी चाहिए।

१. इसमें ग्रामीण कृषि व्यवस्था शामिल होनी चाहिए जिसमें इच्छाएं कम हों और सहयोग, संकीर्णता इत्यादि सामाजिक नागरिक और आर्थिक क्रियाओं की शासन पद्धति हो ।

२. कृषि के अतिरिक्त, अन्य उत्पादन कुटीर उद्योग और दस्तकारी पर आधारित होने चाहिए। शिक्षा हस्तशिल्प पर केन्द्रित होनी चाहिए। विकेन्द्रीकरण और हस्तशिल्प उत्पादन आधारित शासित सिद्यांतों के अतिरिक्त तीन अन्य आर्थिक नियमों का पालन या अभ्यास करना चाहिए. ग्रामीण आत्म-निर्भरता, जीविकापार्जन (स्वयं के शरीरिक श्रम द्वारा जीविकोपार्जन), अपरिग्रह (न्यूनतम उपयोग की वस्तुओं का प्रयोग या संग्रह) । भारी मशानों या भारी वाहनों का इस समाज में कोई स्थान नहीं है।

गांधी ने मानवीय समस्याओं के प्रति एकीकृत दृष्टिकोण अपनाया। उनका मूल उद्देश्य अर्थशास्त्र को कम करना और धर्म तथा आध्यात्मिकता को बढ़ाना था। उनके लिए

नीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र दो अलग अस्तित्व वाले नहीं है। अर्थशास्त्र जो एक राष्ट्र या व्यक्ति के नैतिकता को क्षति पहुंचाता है, अनैतिक है और इसलिए यह पापमय है।" सच्चा अर्थशास्त्र गांधी के अनुसार, सामाजिक न्याय के लिए के होता है, यह सबसे कमजोर सहित सभी की समान रूप से भलाई करता है और सुंदर जीवन के लिए अपरिहार्य है। वह मुख्य रूप से भारत और विश्व के लिए एक ऐसे आर्थिक संविधान को बनाना चाहते थे जिसमें कोई भी रोटी, कपड़ा और मकान की पीड़ा से न गुजरे जीवन की सभी आवश्यकताएं सभी को मुफ्त में उपलब्ध होनी चाहिए, जैसे कि ईश्वर की हवा पानी है। 5 वैसी आर्थिक संविधान की रचना, भौतिक धन पर नहीं बल्कि अध्यात्मिक पर करना चाहते थे। यह तभी संभव है जब प्रत्येक सोने से अधिक सच्चाई, शक्ति एवं संपदा की शान से अधिक भयहीनता, स्वयं के प्रेम से अधिक उदारता दिखाए। गांधी की सर्वोदय की आर्थिक व्यवस्था साधारण, विकेन्द्रीयकरण, स्व- आत्मनिर्भरता, सहयोग, समानता, अहिंसा, श्रम की महत्ता मानवीय मूल्य, स्व-निर्भर ग्राम इकाईयां, मूलभूत उद्योगों का राष्ट्रीकरण, स्वदेशी और ट्रस्टीशिप के सिद्धांतों पर आधारित है। बदले में, यह सभी श्रम, पूंजी, उत्पादन, वितरण और लाभ इत्यादि के अतिरिक्त सभी समस्याओं का समाधान करेंगे।

गांधी ने स्वयं को समाजवादी एवं साम्यवादी कहा। लेकिन उनके लिए समाजवाद वादावादी सामाजिक दर्शन का रुखवादी प्रकार है जो अपनी पूर्णता सर्वोदय में पाता है । " सर्वोदय एवं समाजवाद की उत्पत्ति की स्थिति का पृष्ठभूमि विभिन्न हैं। जबकि उनके मानवीय आदर्शवाद प्राय: समान है।" जयप्रकाश नारायण के अनुसार, सर्वोदय सर्वोच्च सामाजिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। पूरे पश्चिम से दर्शन के रूप में समाजवाद का उदय औद्योगिक सर्वहारा वर्ग के रूप में हुआ और समकालीन राज्य के दावे को चुनौती दी, जिसने उद्योगपतियों के हितों को सहारा दिया। सर्वोदय के सिद्धांत वर्तमान समय के व्यापकतम चुनौतियों को पूरा करने में सक्षम है। आज की सर्वोधिक तीव्र आवश्यकता मानवीय पीड़ा की समाप्ति के साथ-साथ युद्ध की समाप्ति है। मानवीय व्यवहार की जटिलता के कारण सर्वोदय भी 21वीं शताब्दी में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। सर्वोदय मानवीय स्वभाव की अच्छाई पर बल देकर मानव जाति को एकता, अंतरराज्यीय संबंध और व्यक्ति का समूहों से संबंध निर्धारण के लिए नैतिक सिद्धांतों के प्रयोग, परिवर्तन की अहिंसक प्रक्रिया, सामाजिक और आर्थिक समानता, आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण, घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव को बाधित करने वाले विभिन्न प्रकार के तनावों को हल करने की कोशिश करता है। सर्वोदय प्रेम, रचनात्मकता और जीवन के आनंद शक्ति को मजबूत करने में सक्षम है। आधुनिक प्रसंगों में, सर्वोदय के अर्थ को "एक और सबों की जागृति" के रूप में व्याख्या की जा सकती है। इस प्रकार, प्रत्येक की जागृति के साथ-साथ यह संपूर्ण मानवीय भावनाएं और व्यक्तित्व की

जागृति को भी संदर्भित करता है। सर्वोदय आत्म अनुभव के सर्वोच्च स्तर को प्राप्त से भी संबंधित है, जिसमें एक व्यक्ति अन्य में अपना प्रदर्शन देखता है।[7]

निष्कर्ष

सर्वोदय का दर्शन जो गांधी की अंतर्दृष्टि और अनुभवों पर आधारित है, यह मानव जाति की समस्याओं के पर्ति मूल्यांकन और नैतिक दृष्टिकोण का पुनर्कथन है। जो युग से प्राचीन भारतीय संस्कृति का हिस्सा रही है। विनोवा भावे ने ठीक कहा है कि "सर्वोदय सभी

की पीड़ा की समाप्ति द्वारा सबों को प्रसन्न करने का अर्थ है बल्कि समानता पर आधारित एक विश्व स्थित को भी लाता है।" गांधी के लिए, सर्वोदय स्व-त्याग और स्वार्थरहित सेवा मैं एक का सब में समा जाने का अर्थ है। उनका सर्वोदय का आदर्श, सबके जनकल्याण के अर्थ के अतिरिक्त, विश्व जनकल्याण एवं सबों का एकीकृत जनकल्याण के अर्थ को शामिल करता है। एक विश्व आदर्श के रूप में, यह केवल न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का ही लक्ष्य नहीं रखता, सभी लोगों की नैतिक-आध्यात्मिक पक्षों को भी विकसित कर रहा है। वर्तमान शताब्दी में सर्वोदय का महान योगदान गांधीवादी नैतिक दृष्टिकोण के पुनर्कथन एवं राज्य एवं समाज के जनकल्याण के लिए दृष्टिकोण निर्माण में संरक्षित हैं।

संदर्भ सूची

१. वी.पी वर्मा, द पोलिटिकल फिलॉस्फी ऑफ महात्मा गांधी एण्ड सर्वोदय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, सन २००१ पृ. 249

२. जो. एन. मोहंती, सर्वोदय एण्ड अरविंदो ए एप्रोचमेंट, गांधी मार्ग, खण्ड 4, सन १९९९ पृ. 301

३. बी. पी. पांडेय, गांधी सर्वोदय एण्ड ऑग्रेनाइजेशन, चुग पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 1988, पृ. 20-21

४. विश्वनाथ टंडन-द सोशल एण्ड पोलिटिकल फिलॉस्फी ऑफ सर्वोदय, आफ्टर गांधी,

५. सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणासी 1965, पृ. 211

६. अनिल दत्त मिश्रा, फंडामेंटल्स अफ गांधीज्म, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. 51

७. के. एम. रथनाम चेट्टी, सर्वोदया एण्ड फ्रीडम, ए गांधीयन एप्रेजल डिस्कवरी पब्लिकेशन हाऊस, नई दिल्ली, 1991, पृ. 46

८. प्रा. आर. के माथुर आधुनिक भारतात का इतिहास, अनुराग प्रकाशन इलाहाबाद सन २००१ पृष्ठ १६९